साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 11, अंक : 1 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 6 अगस्त 2025 से 12 अगस्त 2025 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

लोनी में रंगाई कारखानों से यमुना हो रही जहरीली- रिपोर्ट

गाजियाबाद संयुक्त समिति ने 4 अगस्त 2025 को सौंपी अपनी रिपोर्ट में खुलासा किया है कि लोनी में 37 रंगाई इकाइयां संचालन की बिना वैध सहमति के चल रही हैं। इनमें से अधिकांश आर्य नगर क्षेत्र में स्थित हैं। समिति ने पाया कि लोनी के आर्य नगर क्षेत्र से निकलने वाला गंदा पानी इंदिरापुरी नाले में छोड़ा जा रहा है, जो आगे चलकर यमुना में मिल जाता है। शिकायतकर्ता प्रेम नगर रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन ने अपनी याचिका में दावा किया है कि इलाके में 286 से ज्यादा छोटी अवैध फैक्ट्रियां रंगाई के लिए खतरनाक केमिकल का उपयोग कर रही हैं।

इन इकाइयों को प्रशासन से अनुमति या उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) से एनओसी नहीं मिली है, फिर भी ये बेधड़क चल रही हैं। प्रतीकात्मक तस्वीर- आईस्टॉक इनसे निकलने वाले केमिकल हवा और पानी को प्रदूषित कर रहे हैं, आरोप है कि यह जहरीला पानी नालियों में बहकर भूजल में रिस रहा है, जिससे भूजल की गुणवत्ता भी खराब हो रही है। गौरतलब है कि 24 अक्टूबर 2024 को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने इस मामले पर सख्त रुख अपनाते हुए जांच के लिए एक संयुक्त समिति के गठन का आदेश दिया था। समिति की

पहली जांच में 17 अवैध रंगाई इकाइयां पकड़ी गईं, जिन्हें बंद कर दिया गया और उनके बिजली कनेक्शन भी काट दिए गए। 31 मार्च 2025 को दाखिल अंतरिम रिपोर्ट में बताया गया कि क्षेत्र में मौजूद 111 इकाइयों का सर्वेक्षण कई चरणों में किया गया। यह सर्वे उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, लोनी नगर पालिका परिषद और बिजली विभाग के अधिकारियों द्वारा किया गया। सर्वे के दौरान 26 रंगाई और धुलाई इकाइयों की पहचानी की गई। इनमें से 15 इकाइयों के पास संचालन की वैध अनुमति थी, जबकि 10 इकाइयां बिना अनुमति के चल रही थीं। इसके अलावा, एक इलेक्ट्रोप्लेटिंग फैक्ट्री भी बिना अनुमति के अवैध रूप से चल रही थी। रिपोर्ट के मुताबिक अब तक समिति ने कुल 128 औद्योगिक इकाइयों की जांच की है। 2 अप्रैल 2025 को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने बाकी 175 इकाइयों के सर्वे का आदेश दिया। यह सर्वे उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और बिजली विभाग द्वारा किया गया। इस जांच में पाया गया कि 24 इकाइयां संचालन की बिना वैध अनुमति के अवैध रूप से चल रही हैं। वहीं 2 इलेक्ट्रोप्लेटिंग यूनिट्स भी बिना अनुमति के काम कर रही थीं। रिपोर्ट के अनुसार, इलाके में कुल 50 रंगाई फैक्ट्रियां हैं, जिनमें से 34 के पास संचालन की वैध अनुमति नहीं है और महज 16 फैक्ट्रियां ही वैध अनुमति के चल रही हैं। साथ ही, अब तक की जांच में 3 इलेक्ट्रोप्लेटिंग इकाइयां भी अवैध रूप से चलती पाई गई हैं। रिपोर्ट से यह साफ है कि लोनी में पर्यावरण और स्वास्थ्य को ताक पर रंगाई फैक्ट्रियां अवैध रूप से चल रही हैं। ऐसे में अब निगाहें प्रशासन और एनजीटी पर टिकी हैं कि क्या ये अवैध इकाइयों को स्थाई रूप से बंद करती हैं। साथ ही क्या यमुना और भूजल की रक्षा के लिए सख्त कदम उठाए जाएंगे या नहीं।

वेटलैंड को बचाने के लिए केरल उच्च न्यायालय ने दिए सख्त निर्देश

केरल उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार को अष्टमुडी आर्द्रभूमि के संरक्षण के लिए दो जरूरी कदम उठाने का निर्देश दिया है। अदालत ने 29 जुलाई, 2025 को दिए अपने आदेश में कहा कि इस उद्देश्य के लिए विभिन्न विशेषज्ञों और हितधारकों को शामिल करते हुए एक विशेष प्राधिकरण बनाया जाए, और दूसरा उस क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए अष्टमुडी झील के लिए एक वैज्ञानिक और विस्तृत प्रबंधन योजना तैयार की जाए।

केरल हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश नितिन जमदार और न्यायमूर्ति बसंत बालाजी की बेंच ने राज्य सरकार और राज्य वेटलैंड प्राधिकरण को निर्देश दिया है कि दो महीनों के भीतर 'अष्टमुडी वेटलैंड प्रबंधन इकाई' का गठन किया जाए। अदालत ने यह भी कहा कि छह महीनों के अंदर अष्टमुडी वेटलैंड के लिए एकीकृत प्रबंधन योजना को नियमानुसार अंतिम रूप दिया जाए। जब तक यह योजना तैयार नहीं हो जाती तब तक राज्य वेटलैंड प्राधिकरण को एक अंतरिम प्रबंधन योजना तैयार करनी होगी, ताकि प्रबंधन इकाई को काम करने के लिए दिशा-निर्देश मिलते रहे और संरक्षण कार्य जारी रह सके। गौरतलब है कि यह आदेश एक जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान दिया गया, जिसमें अष्टमुडी झील की बिगड़ती हालत और उसकी बहाली की मांग की गई थी। इस याचिका में कहा

गया है कि तेजी से हो रहे निर्माण, सीवेज और ठोस कचरे के अनियंत्रित बहाव ने अष्टमुडी को गंभीर खतरे में डाल दिया है। इसकी वजह से झील की पारिस्थितिकी और जल गुणवत्ता को गंभीर रूप से नुकसान हो रहा है। याचिकाकर्ताओं ने बताया कि आवासीय इलाकों और व्यावसायिक स्थलों से सीवेज, ठोस और बायोमेडिकल कचरे का अंधाधुंध नाले में बहाया जाना सबसे बड़ी समस्या है। इसके साथ ही तटों पर अतिक्रमण से मैंग्रोव के जंगल नष्ट हो रहे हैं। इससे मत्स्य जीवन और स्थानीय मछुआरों की जीविका पर खतरा मंडराने लगा है। कोर्ट ने माना कि याचिकाकर्ताओं के आरोप सरकारी रिकॉर्ड से मेल खाते हैं, जो समस्या की गंभीरता को दर्शाते हैं। केरल राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा 2020 से 2022 के बीच कराए गए स्वच्छता सर्वेक्षण में पाया गया कि इलाके में कचरा प्रबंधन की स्थिति बेहद चिंताजनक है और इससे स्वास्थ्य संबंधी गंभीर खतरे पैदा हो सकते हैं। दूसरा दस्तावेज पर्यावरण समिति की रिपोर्ट है। इस रिपोर्ट में अष्टमुडी की बिगड़ती स्थिति पर चिंता जताई है। रिपोर्ट में कहा गया कि अष्टमुडी में भारी प्रदूषण, अतिक्रमण और तलछट जमा होने की समस्या है। इसके चलते अष्टमुडी का क्षेत्रफल 61.4 वर्ग किलोमीटर से घटकर अब महज 34 वर्ग किलोमीटर रह गया है। चिंता की बात है कि कुछ तटीय इलाकों में इसकी गहराई आधे मीटर से भी कम रह गई है। इस क्षेत्र में कृषि और नियमों को ताक पर रख हो रहे निर्माण और पर्यटन गतिविधियां दलदलों और मैंग्रोव का बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचा रही हैं। अष्टमुडी पर शहरी विस्तार जैसे होटल, इमारतें और व्यावसायिक गतिविधियों का भी दबाव है। इसके साथ ही खेतों से बहकर आने वाले रसायन, कीटनाशकों का उपयोग, मछली पकड़ने के खराब तरीके और कचरा प्रबंधन की गलतियां भी झील को नुकसान पहुंचा रही हैं। वहीं कोल्लम और नींदाकारा बैकवॉटर्स में पर्यटन से होने वाला कचरा और प्लास्टिक जमा होने से पानी की गुणवत्ता बुरी तरह प्रभावित हुई है।

अतिवर्षा की स्थिति पर नजर रखें और जान-माल के बचाव को दें प्राथमिकता-मख्यमंत्री डॉ. यादव

श्रावण मास और त्यौहारों पर करें अग्रिम व्यवस्थाएं

इंदौर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सभी जिलों में अतिवर्षा की स्थिति पर नजर रखी जाए। कलेक्टर एवं प्रशासनिक तथा पुलिस अमला अधिक वर्षा की स्थिति में आपदा की हालत उत्पन्न होने के पूर्व नागरिकों के बचाव के लिए आवश्यक प्रबंध सुनिश्चित करें। संवेदनशील और सजग होकर प्रभावित नागरिकों की सहायता की जाए। पशु हानि और मकानों की क्षति पर भी प्रावधानुसार अविलम्ब मदद पहुंचाएं। इन कार्यों को सभी कलेक्टर्स प्राथमिकता दें।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार की शाम समत्व भवन मुख्यमंत्री निवास, भोपाल से वीडियो कॉन्फ्रेंस द्वारा प्रदेश के सभी कलेक्टर्स को निर्देशित कर रहे थे। इस बैठक में इंदौर संभागायुक्त कार्यालय से संभागायुक्त श्री दीपक सिंह, आईजी श्री अनुराग, संयुक्त आयुक्त विकास श्री डी.एस. रणदा, क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य सेवाएं डॉ. शॉजी जोसेफ, संयुक्त संचालक नगरीय प्रशासन एवं विकास श्री एस.के.सिन्हा, संयुक्त संचालक उद्योग श्री एस.एस. मण्डलोई, संभागीय उपायुक्त जनजातीय कार्य विभाग श्री बृजेश पाण्डे, प्रभारी संयुक्त संचालक पशुपालन एवं डेयरी डॉ. विलसन डाबर, कृषि कॉलेज की अधिकारी श्रीमती नम्रता गुरनानी वीडियो कान्फ्रेंसिंग द्वारा शामिल हुए। बैठक में इंदौर कलेक्टर कार्यालय के एनआईसी कक्ष से कलेक्टर श्री आशीष सिंह, नगर निगम आयुक्त श्री शिवम वर्मा, डीआईजी ग्रामीण श्री निमिष अग्रवाल, एसपी ग्रामीण सुश्री यांगचेन डोलकर भूटिया, जिला पंचायत के सीईओ श्री सिद्धार्थ जैन सहित अन्य अधिकारी शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्रावण मास में मंदिर परिसर भी सुविधायुक्त बनाएं, जिससे श्रद्धालुओं को कोई असुविधा न हो। आगामी 9 अगस्त को रक्षाबंधन, 14 अगस्त को बलराम जयंती, 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस और 16 अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी पर होने वाले महत्वपूर्ण पर्वों के लिये आवश्यक व्यवस्थाएं अग्रिम रूप से की जाएं।

सैलाब से सहमा गुना- मौत का बहाव, मलबे में दबी उम्मीदें, हालात बिगड़े तो सेना ने संभाला मोर्चा

गुना (एजेंसी) । जिले में बाढ़ अब सिर्फ पानी की नहीं, दर्द और तबाही की कहानी बन गई है। मंगलवार दिनभर और रातभर भारी बारिश ने ऐसा कहर बरपाया कि लोग अपनी आंखों के सामने जिंदगी उजड़ती देख रो पड़े। कोई अपनी दुकान के बर्बाद हुए सामान को गले लगाकर बैठा रहा तो कोई ढह चुके घर की दीवारों को ताकते हुए अपने सिर पर आसमान का बोझ लिए खड़ा मिला। हालात इतने बिगड़े कि कलोरा बांध की वेस्ट बीयर टूट गई और सेना को मोर्चा संभालना पड़ा। बाढ़ की मार ने दो जिंदगियों को निगल लिया। एक मजदूर पानी के तेज बहाव में बह गया, तो दूसरी ओर कर्नलगंज में एक पक्का मकान धराशायी होकर बुजुर्ग की जान ले गया। इन हादसों ने पूरे जिले को गम और गुस्से में डुबो दिया। लोग अपने ही शहर को पहचान नहीं पा रहे, कहीं दुकानें उजड़ गईं, कहीं आशियाने मिट्टी में मिल गए। हर तरफ अफरा-तफरी है, चेहरे पर थकान है और दिल में सिर्फ यही सवाल—अब आगे क्या?

दरअसल जिलेभर में मंगलवार को हुई भारी और बाढ़ का असर लगातार दूसरे दिन भी देखने को मिला। इस दौरान बुधवार को भी रूक-रूक कर बारिश का दौर जारी रहा। मौसम विभाग के अनुसार पिछले चौबीस घंटे में रिकॉर्ड 323 मिमी बारिश हुई। मंगलवार-बुधवार की दरम्यानी रात आधे से ज्यादा शहर बाढ़ की विभीषक रही। अगले दिन बुधवार को लोग बर्बादी के बीच अपनी गृहस्थी और दुकान का सामान बटोरते नजर आए। वहीं लोगों ने रातभर डर के साये में काटा। शहर में ही कई जगहों से लोगों को रेस्क्यू किया गया। रात को प्रशासन ने ऐसे लोगों को उत्कृष्ट विद्यालय सहित अन्य सुरक्षित जगहों पर ठहराया। इस दौरान सैकड़ों की संख्या में घरों में गृहस्थी बर्बाद हो गई। इधर गांवों के हालात तो और भी भयावह है। बमोरी क्षेत्र में कलोरा डेम टूटने की आशंका में सेना की तैनाती करनी पड़ी। सेना ने यहां मोर्चा संभालते हुए रेस्क्यू और राहत कार्य युद्धस्तर पर शुरू किए। बाढ़ के बाद बुधवार को लोग अपनी दुकानें और घरों के हाल देखकर रो पड़े। नानाखेड़ी मंडी गेट पर संचालित एक इलेक्ट्रॉनिक्स की दुकान के हाल यह थे कि उसमें फ्रिज, कूलर, टीवी, एसी, पंखे सहित अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स का सामान पानी में तैर रहा था। पास में संचालित एटीएम भी तेज पानी के बहाव में बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। जिसमें फंसा लाखों का कैश बर्बाद होने की सूचना है। आई बाढ़ में शहर की भगत सिंह कॉलोनी, न्यूसिटी कॉलोनी, नानाखेड़ी, पुरानी छावनी, बूढ़े बालाजी, रपटा, नीचला बाजार, छबड़ा कॉलोनी, राधा कॉलोनी, बांसखेड़ी, आदर्श कॉलोनी, श्रीराम कॉलोनी, कैंट, लूसन का बगीचा, कालापाठा सहित दर्जनों जगहों पर मकान एक-एक मंजिल तक डूब गए। वहीं हाट रोड से लेकर खटीक मोहल्ला, बंगला मोहल्ला आदि क्षेत्र में भी बाढ़ ने जमकर तबाही मचाई। हाट रोड सहित शहरभर की सडक़ों के बुरे हाल हैं। सडक़ें पूरी तरह उखड़ गई। कर्नलगंज क्षेत्र में मकान ढहने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। जबकि एबी रोड से एक व्यक्ति बहाव में बहने के कारण मौत हो गई। जिसका शव बुधवार को मिला। हाट रोड पर लगभग हर दुकान में पानी के सैलाब ने जमकर तबाही मचाई। दुकानदारों के अनुसार पानी के सैलाब ने उन्हें संभलने तक का मौका नहीं दिया। रात 9 बजे तक रपटा का पानी मंडी गेट तक था। जिले में मूसलाधार बारिश ने जनजीवन को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया। बमोरी इलाके के कलोरा बांध की वेस्ट बीयर करीब 10 फीट तक टूट गई, जिससे बाढ़ जैसे हालात बन गए। स्थिति को गंभीर देखते हुए प्रशासन ने सेना और एनडीआरएफ की टीमों को मौके पर तैनात किया है। कलोरा बांध की क्षतिग्रस्त बीयर से पानी तेज बहाव के साथ नीचे की ओर फैला, जिससे सिंगापुर, तुमड़ा, कुडक़ा, बनियानी, बंधा, उमरधा सहित राजस्थान सीमा से लगे गांव मामली, बिलोदा और पचलावदा में पानी भर गया। प्रशासन ने इन गांवों में रहने वाले 3,550 लोगों को सतर्क कर दिया है और कई लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा चुका है।

मध्य प्रदेश के बिजली घरों को एफजीडी से छूट, बढ़ेगा प्रदूषण और स्वास्थ्य जोखिम

इंदौर/भोपाल। मध्य प्रदेश के कोयला आधारित थर्मल पावर प्लांट्स को फ्ल्यू गैस डीसल्फराइजेशन (एफजीडी) तकनीक से छूट देने के केंद्र सरकार के फैसले के बाद वायु प्रदूषण और स्वास्थ्य जोखिम बढ़ने की आशंका बढ़ गयी है। जुलाई 2025 की अधिसूचना के तहत पर्यावरण मंत्रालय ने 2015 में तय किये गए उत्सर्जन मानकों में ढील देते हुए कैटेगरी 'सी' के सभी प्लांट्स को अब एफजीडी लगाने से मुक्त कर दिया है। राज्य में कुल 48 थर्मल पावर यूनिट्स हैं, जिनकी क्षमता 21,910 मेगावॉट है। ये सभी 'कैटेगरी सी' में आती हैं, यानी अब 100त्न क्षमता सल्फर डाइऑक्साइड नियंत्रण के बिना चल सकेगी। फिलहाल केवल छह यूनिट्स-दो निजी और चार केंद्र सरकार के स्वामित्व वाली-एफजीडी सिस्टम से लैस हैं, जबकि राज्य सरकार के किसी भी प्लांट में यह तकनीक लागू नहीं है।

एफजीडी तकनीक सल्फर डाइऑक्साइड (स्ह्र२), पीएम2.5 और पारे जैसी जहरीली गैसों को कम करने के साथ-साथ सीमेंट उद्योग के लिए उपयोगी सिंथेटिक जिप्सम भी तैयार करती है। भारत पहले से ही दुनिया में सल्फर डाइऑक्साइड का सबसे बड़ा उत्सर्जक है और वैश्विक मानवजनित उत्सर्जन में उसका योगदान 20त्न है। इसमें से 60त्न उत्सर्जन कोयला आधारित बिजली घरों से होता है। विशेषज्ञों के मुताबिक यह छूट जबलपुर, सागर, देवास, उज्जैन, इंदौर, भोपाल और ग्वालियर जैसे औद्योगिक और कोयला क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता को और खराब कर सकती है। एफजीडी की बाध्यता खत्म होने के बाद राज्य के शहरों में पीएम2.5 स्तर कम करने के राष्ट्रीय लक्ष्य को हासिल करना अब और मुश्किल होगा। सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर (क्रेया) के विश्लेषक मनोज कुमार बताते हैं कि एफजीडी से सल्फर डाइऑक्साइड और पारे के उत्सर्जन में कमी के साथ-साथ सीमेंट उद्योग को जिप्सम की आपूर्ति भी होती है। लेकिन छूट देने से न केवल वायु प्रदूषण और असमय मौतों का खतरा बढ़ेगा, बल्कि परिपत्र अर्थव्यवस्था और स्वच्छ वायु लक्ष्यों की दिशा में प्रगति भी रुक जाएगी।

धरती की तरफ बढ़ रहा रहस्यमयी ऑब्जेक्ट, यह एलियंस का विमान तो नहीं!

बाबा वेंगा की भविष्यवाणी कहीं सही साबित न हो जाए, वैज्ञानिक परेशान

बल्गेरिया, बाबा वेंगा जिनकी आंखें भी नहीं थीं, उन्होंने सैकड़ों साल बाद होने वाली घटनाओं को बता दिया था। उन्होंने 2025 के बारे में कहा था कि ये वही साल होगा, जब इंसानों का एलियनों से संपर्क होगा। अब वैज्ञानिकों का दावा है कि एक रहस्यमयी ऑब्जेक्ट अंतरिक्ष में धरती की ओर बढ़ रहा है। इसका नाम 3आई/एटल्स है, जो शायद एलियन जहाज है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एक जुलाई को चिली में एक टेलीस्कोप से इस ऑब्जेक्ट को देखा गया था। अगले 24 घंटे में ही पता चल गया कि ये हमारे सोलर सिस्टम के बाहर से आई चीज़ है। रिपोर्ट के मुताबिक ये धरती की ओर आते हुए देखा गया तीसरा इंटरसेलर है। आशंका है कि ये ऑब्जेक्ट इसी साल नवंबर में धरती के पास पहुंचेगा, जिसके बाद ये सूर्य के पीछे चला जाएगा और धरती से नहीं दिखेगा। यह 1.3 लाख मील प्रति घंटा की रफ्तार से सूर्य की ओर बढ़ रहा है। इसका आकार 10 से 20 किलोमीटर है, जो किसी सामान्य शहर से भी बड़ा है। शुरुआती अनुमान में यह एक धूमकेतु माना गया। हार्वर्ड के प्रोफेसर और उनकी टीम ने दावा किया है कि इसकी कक्षा, संरचना और गति इसे एलियन जासूसी यान साबित कर सकते हैं। बाबा वेंगा ने 2025 में एलियंस से संपर्क की भविष्यवाणी की थी। उन्होंने इसी साल यूरोप में युद्ध, आर्थिक संकट और प्राकृतिक आपदाओं के बारे में भी कहा था, जो काफी हद तक सही साबित हुई हैं। ऐसे में 3आई/एटल्स की टाइमिंग और दिशा को लेकर कई लोग इसे उनकी भविष्यवाणी से जोड़ रहे हैं। इस वक्त डार्क फॉरेस्ट हाइपोथेसिस भी चर्चा में आ गई है, जिसके मुताबिक दुनिया की कुछ उन्नत सभ्यताएं खुद को छिपाकर रखती हैं, ताकि वे किसी खतरे में न आएं। इस एलियन यान को उससे भी जोड़कर देखा जा रहा है।

प्रोफेसर का कहना है कि यह वस्तु जानबूझकर ऐसी कक्षा में आ रही है जिसे पृथ्वी से मॉनिटर करना मुश्किल है। ऊपर से इसकी गति इतनी तेज है कि इस वक्त पृथ्वी पर मौजूद तकनीक से इसे रोका या पास से देखा नहीं जा सकता। सोशल मीडिया पर लोग इसे कॉस्मिक ट्रोजन हॉर्स भी कह रहे हैं, जबकि कुछ इसे अंतरिक्ष इतिहास का सबसे बड़ा मौका मान रहे हैं। नवंबर 2025 में 3आई/एटल्स की धरती से नजदीकी दुनियाभर की अंतरिक्ष एजेंसियों के लिए चुनौती बन चुकी है। वैज्ञानिक इस रहस्य से पर्दा हटाने की कोशिश कर रहे हैं कि ये सिर्फ कोई असामान्य धूमकेतु है या वाकई दूसरी दुनिया या सभ्यता से इंसान का संपर्क होने वाला है।

भगवान गणेश, मां दुर्गा और महालक्ष्मी की प्रतिमाएं मिट्टी से ही निर्मित हों -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भगवान गणेश सबके मनोरथ पूरे करें, कृपावंत का शुभाशीष सब पर बरसे

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया 'माटी गणेश- सिद्ध गणेश' अभियान का शुभारंभ

इंदौर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा संचालित 'माटी गणेशङ्कसिद्ध गणेश' अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भगवान गणेश के पूजन से व्यक्ति को ज्ञान, बुद्धि और रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है। भगवान गणेश सबके मनोरथ पूर्ण करें। कृपावंत भगवान का शुभाशीष हम सब पर बरसे और हमारे प्रदेश में सुख-समृद्धि का सतत् संचार हों। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जन अभियान परिषद के पदाधिकारियों से कहा कि भगवान गणेश, नवरात्रि में मां दुर्गा और दीपावली पर्व पर महालक्ष्मी की प्रतिमाएं भी मिट्टी से ही निर्मित हो। इसके लिये जागरूकता अभियान भी चलाएं। उन्होंने कहा कि मिट्टी की प्रतिमाएं मिट्टी में ही समाहित हो जाती हैं, इससे पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं होता। इस अभियान का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और गणेश चतुर्थी पर्व पर जन-जन को पवित्र माटी और गौमाता के गोबर से निर्मित गणेश प्रतिमाओं के उपयोग को प्रोत्साहित करना है, ताकि जल स्त्रोतों की स्वच्छता बनी रहे और प्राकृतिक संतुलन भी अक्षुण्ण रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अभियान में निहित संकल्पना पर केन्द्रित एक सचित्र पोस्टर का विमोचन भी किया। परिषद् द्वारा पर्यावरण संरक्षण की नवाचारी पहल करते हुए %माटी गणेश-सिद्ध गणेश अभियान चलाया जायेगा। इस अभियान में पर्यावरण हितैषी संस्थान नर्मदा समग्र द्वारा प्रशिक्षण के माध्यम से प्रदेश के सभी 313 विकासखण्ड में परिषद् के नेटवर्क से जुड़ी नवांकुर सखियों को प्रशिक्षित किया जायेगा। प्रशिक्षित सखियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से अपने ग्रामों में स्थानीय महिलाओं को प्रेरित-प्रशिक्षित कर मिट्टी की 10 लाख गणेश प्रतिमाओं की घर-घर स्थापना करायी जायेगी। अभियान का लक्ष्य 10 लाख गणेश प्रतिमाओं का निर्माण कर 25 लाख लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अभियान के संकल्पना गीत एवं पोस्टर का विमोचन भी किया।

कार्यक्रम में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर भी उपस्थित थे। सभी ने संकल्प लिया कि इस वर्ष घरों में केवल मिट्टी और गौमाता के गोबर से बनी गणेश प्रतिमाएं ही स्थापित की जाएंगी और इन प्रतिमाओं का विसर्जन भी नितांत प्राकृतिक तरीके से ही किया जाएगा। म.प्र. जन अभियान परिषद के कार्यपालक निदेशक डॉ. बकुल लाड़ ने बताया कि परिषद् ने नर्मदा समग्र संस्था के साथ माटी गणेश-सिद्ध गणेश अभियान की नई पहल की है। परिषद् के प्रशिक्षित नेटवर्क द्वारा अपने ग्राम की महिलाओं को मिट्टी के गणेश भगवान की प्रतिमा बनाने के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित किया जायेगा, जिससे %माटी गणेश-सिद्ध गणेश% घर-घर विराजित और विसर्जित होंगे। इससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता बढ़ेगी।

महिला ने मृत्यू के बाद का बताया अनुभव कहा- वाह मौत के बाद का मजा पूरी दुनिया में नहीं

वाशिंगटन (एजेंसी)। विक्टोरिया थॉमस नाम की एक महिला की मौत हो गई। करीब 17 मिनट तक मृत रही। इसके बाद वो जिंदा गई। महिला ने जो अनुभव बताया वो काफी चौंकाने वाला था। आमतौर हम ज्यादातर आफ्टरलाइफ एक्सपीरियंस बताते हैं कि मौत के बाद उन्हें काफी सुकून महसूस हुआ। ऐसा मजा पूरी दुनिया में कहीं नहीं है। हालांकि विक्टोरिया बताती हैं कि उस दौरान उन्हें ऐसा लगा जैसे वह ऊपर छत के पास तैर रही थीं और नीचे अपना शरीर देख रही थी।

उन्होंने कहा कि मैंने खुद को देखा और सोचा कि मेरी टांगें कितनी मोटी लग रही हैं। बाद में एक फोटो देखकर पता चला कि मेरी टांगें वाकई में सूज गई थीं। उन्हें ब्रिस्टल रॉयल इंफर्मरी में भर्ती कराया गया, जहां वे तीन दिन तक कोमा में रहीं। डॉक्टर्स ने उन्हें एक पेसमेकर लगाया ताकि भविष्य में अगर फिर से कार्डियक अरेस्ट हो, तो पेसमेकर दिल को झटका देकर दोबारा शुरू कर सके। विक्टोरिया थॉमस की किस्मत अच्छी थी कि एम्बुलेंस समय पर पहुंच गई और पैरामेडिक्स ने तुरंत सीपीआर शुरू किया। हालांकि इस बीच 17 मिनट तक उनका दिल बंद था। फिर चमत्कार हुआ और विक्टोरिया के दिल ने फिर से धड़कना शुरू कर दिया। विक्टोरिया ने इसके बाद अपने अनुभव को लेकर जो बताया, वो अब तक सुनी जाने वाली पुरानी बातों से बिल्कुल अलग था। साल 2021 में विक्टोरिया गर्भवती हुईं और उनका दिल कई बार फिर से रुक गया, लेकिन पेसमेकर ने उनकी जान बचाई। गर्भावस्था के दौरान उन्हें एक दुर्लभ आनुवंशिक बीमारी का पता चला, जिससे दिल कमजोर हो जाता है। यह बीमारी बहुत ही कम लोगों को होती है लेकिन उनकी हालत ऐसी खराब हो गई थी कि दिल केवल 11 फीसदी काम कर रहा है और उनके पास केवल कुछ महीने की जिंदगी बची है। उन्हें तुरंत हार्ट ट्रांसप्लांट की ज़रूरत थी। कई बार दिल मिलने की उम्मीद जगी, लेकिन वह उपयुक्त नहीं निकले। आखिरकार अप्रैल, 2023 में उन्हें एक उपयुक्त दिल मिला और उनका सफल ट्रांसप्लांट हुआ। अब विक्टोरिया पूरी तरह स्वस्थ हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008